आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2648 • उदयपुर, शनिवार 26 मार्च, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

सिरमौर, हिमाचल प्रदेश में दिव्यांगों को राहत का उपक्रम

नारायण सेवा संस्थान का ध्येय है कि दिव्यांग भी दौड़ेगा–अपनी लाठी छोड़ेगा। इस क्रम में संस्थान की शाखाओं व दानदाताओं के सहयोग से दिव्यांग जाँच, उनका ऑपरेशन के लिये चयन तथा कृत्रिम अंगों का माप लेना व अंग लगाने का कार्य गति पर है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 13 मार्च 2022 को ज्ञानचंद गोयल, धर्मशाला सिरमौर हिमाचल प्रदेश में हुआ। शिविर सहयोगकर्ता नव शिव शक्ति दुर्गा मंडल क्लब रहा। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 210, कृत्रिम अंग माप 15, कैलिपर्स माप 14, की सेवा हुई तथा 09 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

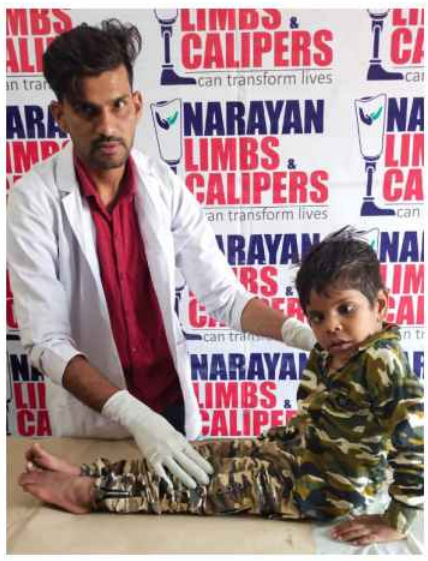

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् अरुण जी गोयल (समाज सेवी), अध्यक्षता श्रीमान सातीश जी गोयल (समाज सेवी), विशिष्ट अतिथि श्रीमान सचिन जी (समाज सेवी) रहे। डॉ.सचिन जी (ऑर्थोपेडिक सर्जन), श्री डॉ. अरविन्द जी ठाकुर (पी.एन.डो.), श्री भगवती जी (टेक्निशियन) शिविर टीम में श्री मुकेश जी शर्मा (शिविर प्रभारी), श्री हरीश सिंह जी रावत, श्री देवीलाल जी मीणा (सहायक), श्री मुन्ना सिंह जी (फोटोग्राफर) ने भी सेवायें दी।

हांसी, हिसार (हरियाणा) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षों से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 13 मार्च 2022 को बजरंग आश्रम, हांसी जिला हिसार में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता मानव जागृति मंच, हांसी (हरियाणा) रहा। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 210, कृत्रिम अंग माप 27, कैलिपर माप 29 की सेवा हुई तथा 42 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् विनोद जी भियाना (विधायक, हांसी), अध्यक्षता श्रीमान् मदन मोहन जी सेठी (समाज सेवी), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् श्याम जी मखीजा (समाज सेवी पूर्व सभापति, हांसी), श्रीमान् सतीश जी कालरा (प्रधान मानव जागृति मंच), श्रीमान् जगदीश जी जागड़ा (समाज सेवी दानदाता), डॉ. रामस्वरूप जी यादव (समाज सेवी) रहे।

डॉ. सिद्धार्थ जी लाम्बा (ऑर्थोपेडिक सर्जन), डॉ. गौरव जी तिवारी (पी.एन.डो), श्री नाथू सिंह जी (टेक्निशियन) शिविर टीम में श्री लाल सिंह जी (शिविर प्रभारी), श्री रामसिंह जी (आश्रम प्रभारी), श्री मनीश जी हिन्डोनिया (सहायक), श्री बहादुर सिंह जी, श्री सत्यनारायण जी (प्रचारक सहायक) ने भी सेवायें दी।

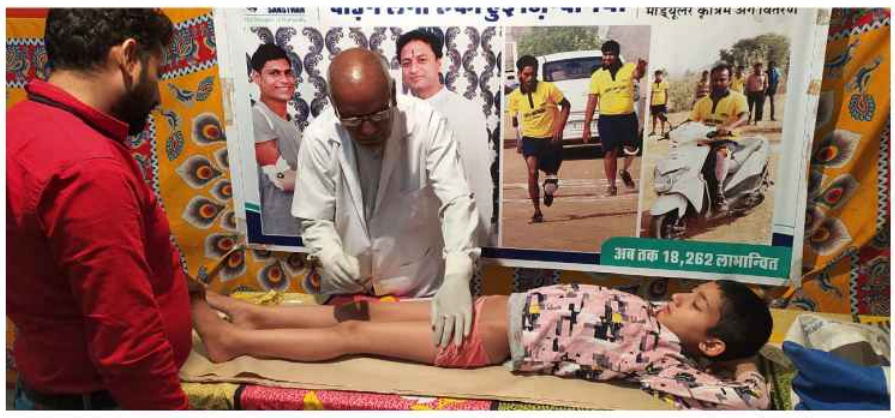

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

शिविर (कैम्प)
दिनांक : 27 मार्च, 2022

विशाल नि:शुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर

स्थान

दिशा सेन्टर, एस.यू.एम.आई स्कूल के पास, के.डी प्रधान रोड़, कलींपोंग, बंगाल

जे.जे. फार्म, केराना रोड़, शामली, उत्तरप्रदेश

अन्ध कल्याण केन्द्र, डॉ. नीलकन्ठ राय छत्रपति मार्ग, पीक सीटी के पास, अहमदाबाद, गुजरात

शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में
जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन, नारायण सेवा संस्थान

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

स्नेह मिलन समारोह
दिनांक : 27 मार्च, 2022
समय : प्रातः 11.00 बजे से

स्थान

बावड़ी धर्मशाला , जालंधर केन्ट, जालंधर पंजाब

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद भोजपुरी, इमरीपारा, पुराना बस स्टेण्ड के पास, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन शावक संघ, पारेख लेन कार्नर, एस.वी. रोड, कांदीवली, मुम्बई

इसस्नेह मिलन समारोह में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में
जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन, नारायण सेवा संस्थान

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान

विश्वास तथा विश्वास में अंतर

एक बार, दो बहुमंजिली इमारतों के बीच, बंधी हुई एक तार पर लंबा सा बाँस पकड़े, एक नट चल रहा था। उसने अपने कन्धे पर अपना बेटा बैठा रखा था। सैंकड़ों, हजारों लोग दम साधे देख रहे थे। सधे कदमों से, तेज हवा से जूझते हुए, अपनी और अपने बेटे की जिंदगी दाँव पर लगाकर, उस कलाकार ने दूरी पूरी कर ली। भीड़ आह्लाद से उछल पड़ी, तालियाँ, सीटियाँ बजने लगी। लोग उस कलाकार की फोटो खींच रहे थे, उसके साथ सेल्फी ले रहे थे। उससे हाथ मिला रहे थे। वो कलाकार माइक पर आया, भीड़ को बोला– क्या आपको विश्वास है कि मैं यह दोबारा भी कर सकता हूँ? भीड़ चिल्लाई, हाँ, हाँ, तुम कर सकते हो। उसने पूछा, क्या आपको विश्वास है,भीड़ चिल्लाई हाँ पूरा विश्वास है, हम तो शर्त भी लगा सकते हैं कि तुम सफलता पूर्वक इसे दोहरा भी सकते हो। कलाकार बोला, पूरा पूरा विश्वास है ना' भीड़ बोली, हाँ हाँ' कलाकार बोला, ठीक है, कोई मुझे अपना बच्चा दे दे, मैं उसे अपने कंधे पर बैठा कर रस्सी पर चलूँगा। खामोशी, शांति, चुप्पी फैल गयी कलाकार बोला, डर गए। अभी तो आपको विश्वास था कि मैं कर सकता हूँ।

असल में आप का यह विश्वास है, मुझ में विश्वास नहीं है। दोनों विश्वासों में फर्क है साहेब यही कहना है, ईश्वर हैं ये तो विश्वास है परन्तु ईश्वर में सम्पूर्ण विश्वास नहीं है। अगर ईश्वर में पूर्ण विश्वास है तो चिंता, क्रोध, तनाव क्यों जरा सोचिए।

लालच का फल

दो दोस्त धन कमाने के लिए परदेस जा रहे थे। कुछ दूर चलने के बाद रास्ते में उन्होंने देखा कि एक बूढ़ा उनकी ओर भागा हुआ आ रहा है। उसने पास आकर कहा कि इस रास्ते मत जाओ यहां पर एक पिशाच रहता है। दोनों ने सोचा की बूढ़े ने किसी डरावनी चीज को देखा होगा। कुछ दूर चलने के बाद उन्होंने देखा कि रास्ते में एक थैली पड़ी हुई है।

खोलकर देखा तो उसमें सोने की मोहरें थी। दोनों ने सोचा कि अब तो काम बन गया। अब परदेस जाने की जरूरत नहीं है, चलो घर लौट चलें। इस पर पहले दोस्त ने कहा कि चलो अच्छा है पर बड़ी भूख लगी है तुम पड़ोस के गांव से खाना ले आओ फिर चलते हैं। दूसरा दोस्त भोजन के लिए चला गया। रास्ते में वह सोचने लगा कि अब तो मोहरे आधी–आधी हो जाएंगी। क्यों ना दोस्त को जहर देकर मार दें। .....और उसने लौटते समय खाने में विष मिला दिया।

इधर पहला दोस्त भी कुछ यही सोच रहा था। जैसे ही दूसरा दोस्त खाना लेकर आया उसने गला दबाकर उसकी हत्या कर दी। बाद में जब उसने वह विषयुक्त खाना खाया तो खुद भी मर गया। बुजुर्ग की बात सही साबित हुई, लालच के पिशाच ने दोनों को काल का ग्रास बना दिया।

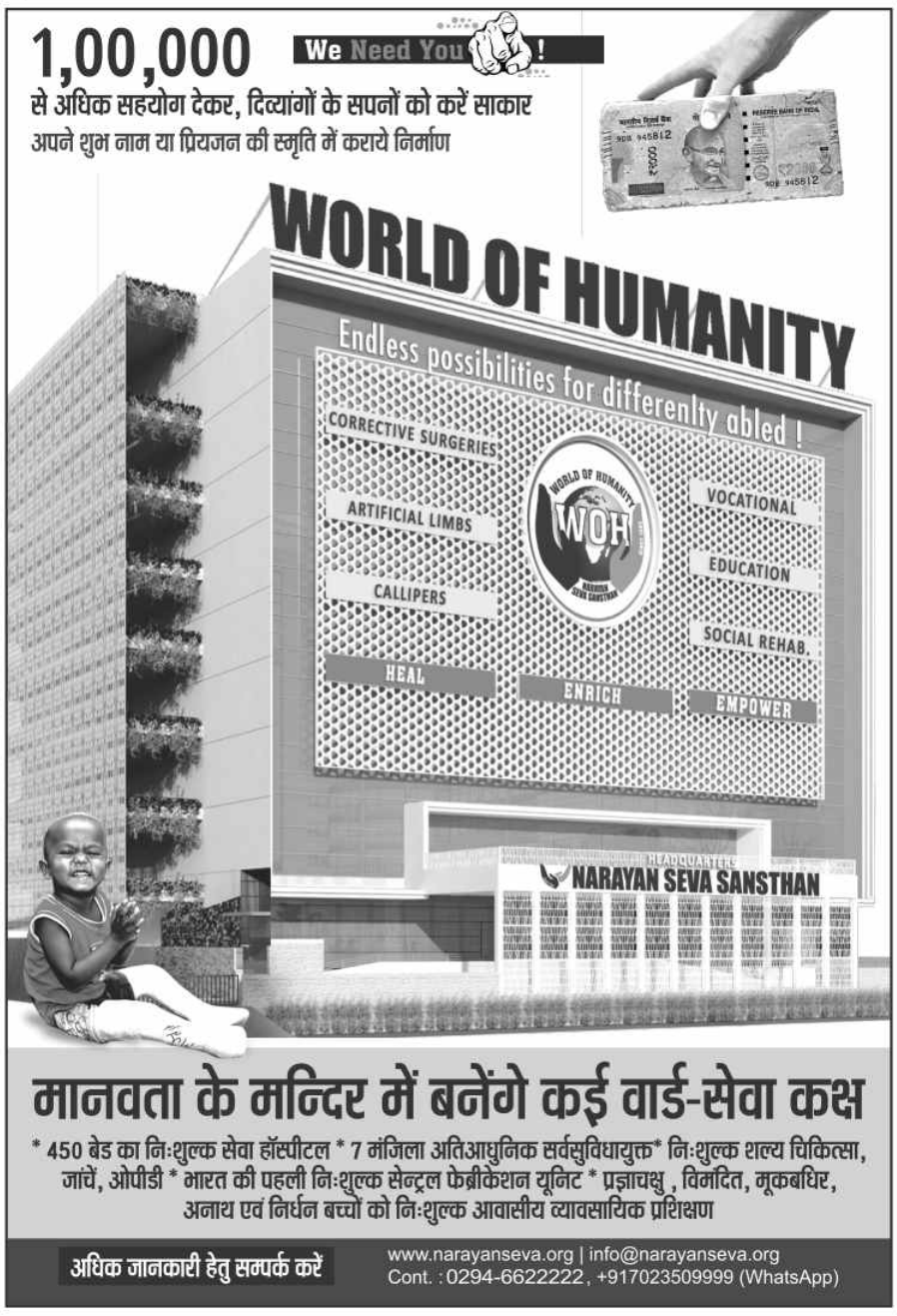

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

रविशंकर जी महाराज– मैं बोलता वैसे कम हूँ। मुस्कुराता हूँ ज्यादा, और सबके चेहरे पर मुस्कान लाने का ये प्रयत्न कर रहे हैं नारायण सेवा संस्थान् ये बहुत सेवाभावी है, ये अति उत्तम सेवा है, यही पूजा है, नर सेवा ही नारायण सेवा है, जन की पूजा ही जर्नादन की पूजा है, तो ऐसा ये आदर्श के साथ, उद्देश्य के साथ, सिद्धान्त के साथ ये संस्था आगे बढ़ रही है। मैं आपको सबको बहुत–बहुत बधाई देता हूँ।

गुरुजी – बोलिये परम् पूज्य श्री रविशंकर जी महाराज की जय हो। ये तो भगवान की कृपा हो गयी– लाला। महाकुम्भ, दिव्यकुम्भ, प्रयागराज गंगामैया की कृपा, यमुना मैया की महाकृपा, सरस्वती माँ की अनुकम्पा और सर्जरी ऑपरेशन होना इसमें ज्यादा बड़ी संख्या में दूर–दूर से लोग आये। गोहावटी से तक लोग आये, असम से दिव्यांग भाई आये, लक्ष्मण जी ने पूछा ज्ञान क्या है ? वैराग्य क्या है? फिर लक्ष्मण जी ने और पूछा भक्ति क्या है ? भक्ति पूर्ण समर्पण जो कहते हैं ना

अब सौंप दिया इस जीवन का,
सब भार तुम्हारे हाथों में।
जीत तुम्हारे हाथो में,
और हार तुम्हारे हाथों में।।

तो समर्पण भक्ति है। और भक्ति में ज्ञान–वैराग्य बूढ़ा होना बताया तो नारद जी ने ग्रंथ के द्वारा श्रीमद् भागवत् महा अमृतम् के द्वारा उनको चेतन किया था, तो जब चेतना आ गयी तो अवचेतन मन हमारा संस्कार हमारे कुछ कभी–कभी कमजोर भी हो गये। उससे बार–बार कहे अवचेतन मन जैसे संज्ञा ने गलत पहचान लिया। क्रोध कर लिया। बिना वजह से, कर लिया तो वो अवचेतन मन है उसकी फोटोकॉपी करली। फिर क्रोध की भी आदत पड़ गयी। कभी–कभी कहते ये तो बड़ा क्रोधी स्वभाव का है। अरे! इससे भाई दूर ही रहना। अभी तो हंस–हंसकर के बोल रहा लेकिन दिन में कई बार इसको क्रोध आ जाता है। तो अपन को क्या करना ? अपने तो हमेशा शांत रहना, आनन्दित रहना, प्रसन्नचित रहना, परिवार को मिलाना सबको जोड़कर के काम करना।

दान, अपने सौभाग्य का पैगाम

बहुत समय पहले की बात है। रमनपुर राज्य में सुबह– सुबह एक भिखारी भीख मांगने निकला। कई बार घूमने के बाद घर से उसे कुछ अनाज मिला। वह राजपथ की तरफ जाने लगा तो उसने देखा कि सामने से राजा की सवारी आ रही थी। वह सड़क के एक ओर खड़ा हो गया और सवारी की गुजर जाने की प्रतीक्षा करने लगा। लेकिन राजा की सवारी उसके सामने ही रूक गई। राजा एक पात्र उसके सामने करते हुए बोले, 'मुझे कुछ भीख दे दो। देखो, मना मत करना। राज्य पर संकट आने वाला है। मुझे किसी ज्योतिषि ने बताया है कि रास्ते में जो भी पहला भिखारी मिले उससे भीख मांग लेना।

इससे संकट टल जाएगा। भिखारी आश्चर्यचकित हो गया। उसने अपने झोले में हाथ डाला और एक मुट्ठी अनाज भर लिया। लेकिन उसके मन में लालच आ गया की इतना दे देगा तो झोले में क्या बचेगा? उसने मुट्ठी ढीली की और कुछ अनाज कम करके राजा के पात्र में डाल दिया। घर जाकर पत्नी से बोला, 'आज तो अनर्थ हो गया। राजा को भीख देनी पड़ी। नहीं देता तो क्या करता।' पत्नी ने झोला उल्टा तो कुछ दाने सोने के निकले । यह देखकर भिखारी बोला, 'काश ! सारा अनाज दे देता तो झोले में उतने सोने के दाने भरे होते जीवन भर की गरीबी मिट जाती।' उसकी समझ में आ गया था, कि दान देने से संपन्नता बढ़ती है घटती नहीं। बसंत के आगमन की खुशी में पेड़– लताएं अपने तमाम पत्ते न्यौछावर कर देते हैं, लेकिन कुछ ही दिनों बाद ये पेड़ पुनः नये पत्तों से भरपूर हो उठते हैं। अभिप्राय यह है कि दिया हुआ दान पुनः किसी न किसी माध्यम से हमें कई गुणा होकर मिलता है।

सम्पादकीय

सेवा करने का सौभाग्य जो पाता है वह अपने जीवन में आनंद की अनुभूति करता है। सेवा केवल परमात्मा के वरदान से ही संभव है। सेवा का विचार करना, सेवा के लिए कदम बढ़ाना, सेवा संसाधनों के लिए अपनी सम्पदा का सदुपयोग करना और सेवा के भावों का प्रसार करना, ये सभी सेवा के विविध आयग्म व अंग हैं। ये सभी कार्य या इनमें से कोई भी कार्य केवल और केवल ईश्वरीय अनुकम्पा से ही संभव है। ईश्वर अपने भक्तों को श्रेय देना चाहते हैं। वस्तुतः सेवा को करना या सेवा का होना दोनों ही परमात्मा के ही प्रताप हैं पर वे किसी न किसी को इसका श्रेय देकर प्रेम प्रदर्शित करते हैं। परमात्मा की कृपा से ही सेवा के प्रति व्यक्ति उन्मुख होता है। जिसको सेवा में रस आ रहा है, जो सेवा कार्यों की सराहना करता है, जिसे सेवा कार्यों में सहयोग देकर आनंद अनुभूत होता है इसका अर्थ है कि उस पर प्रभु कृपा हो रही है। यह कृपा सभी पर हो ऐसी शुभकामना।

कुछ काव्यमय

हाथ पकड़ के दीन का, कदम चलूं दो चार।
यह आदत सध जाय तो, खुश होवें करतार।।
हाथों से परमार्थ हो, मन में मंगल भाव।
दीन-दुखी पर कर सकूँ, सुख की ठंडी छांव।।
सेवा हेतु कदम बढे, ऐसा रचूं विधान।
देना हो तो बस यही, ईश्वर दो वरदान।।
कोई जब तक है दुःखी, फिर कैसा आनंद।
व्यर्थ सम्पदा, विद्वता, दुनिया के सब फंद।।
सेवा का सौभाग्य जब, मिल जाये तो मोद।
हृदय प्रफुलित हो उठे, सरसे मनोविनोद।।

प्रभु से प्रार्थना

नन्हा मुन्हा बालक टाबर,
नंग धड़ंगा डोले रे
कुण तो वांका दुःखड़ा
सूं बोले रे।।

बात है संस्था के असहाय सहायता शिविर की। उदयपुर की सुन्दर झीलों की छवि, सुन्दर भवन, बाग–बगीचों की, रमणीय नगरी के समाप्त होते ही मात्र 15 किमी. की दूरी पर सेवा की गाड़ी जा रही थी हमेशा की अपने सिर पर 30–40 किलो लकड़ियों का बोझ लिए आदिवासी बालक उम्र लगभग 12–13 वर्ष की। अपने पेट की भूख को मिटाने के लिए शहर की ओर लकड़ियां लिए आ रहा था। शरीर पर मैल की मोटी परत। कपडे के नाम पर रसोई में पीछे के काम में लिए जाने वाले कपड़े से भी मैली फटी–पुरानी कमीज, नंगे पांवों की दशा में दुर्बल शरीर को संभालते हुए शहर की ओर आ रहा था। उसके पतले–पतले कांपते पैरों से यूं लग रहा था जैसे लकड़ी की भारी अब गिरी–अब गिरी। मेरे मुंह से निकला "उफ" कितने

जल रहे होंगे इसके –नंगे पैर?
तभी पास बैठे एक सज्जन बोल उठे –"इनकी तो आदत पड़ गई है –दुःख जैसी कोई बात नहीं।"
क्या वास्तव में आदत पड़ गई है? क्या वास्तव में ही इन्हें तकलीफ नहीं होती? नहीं नहीं यह तो इनकी मजबूरी है। शरीर तो इनका भी वैसा ही है –जैसा है हमारा। कांटे तो इनके पैरों में भी वैसे ही चुभते हैं, जैसे बिना बूटों के हमारे। सर्दी–गर्मी , सुख–दुःख, भूख–प्यास की अनुभूति तो इन्हें भी बराबर होती ही है –भाई साहब।
और ध्यान बराबर उस बच्चे पर रहा जब तक वो आँखों से ओझल न हो गया। मन से एक आवाज आई "शायद हमारे हृदय की संवेदना ही कहीं खो गई है –हृदय की करुणा ही समाप्त हो चुकी है। अन्तर की रस गगरी खाली हो रहीं हैं।"
आइए, भगवत कार्यों से जुड़कर कुछ चिंतन–मनन कर पूछे अपने को कि कहीं हमारे साथ तो यह नहीं हो रहा है? ऐसा कि मन की संवेदना ही शून्य हो जाये नहीं–नहीं। आप और हम तो ऐसा नहीं होने देंगे। किसी जरूरतमंद गरीब असहाय दुःखी प्राणी को देखकर आपश्री के पांव रूकेंगे–हाथ उठेंगे सेवा के लिए और अंतः से बरसेगा स्नेह ! आइये करुणा सागर प्रभु से करें (प्रार्थना) –

बंद न कर देना अपने घर के दरवाजे, पता नहीं कब कोई पाहुन घर आये।
रिक्त न कर देना अंतर की रस गगरी, पता नहीं कब कोई प्यासा स्वर आये।।

– कैलाश 'मानव'

न पालें गलतफहमी

किसी शहर में एक जौहरी की मृत्यु के उपरांत उसका परिवार संकट में पड़ गया। घर में खाने के लाले पड़ गए। एक दिन जौहरी की पत्नी ने अपने बेटे को अपना हीरों का हार देकर कहा–"बेटा, इसे अपने चाचा की दुकान पर ले जाओ और इसे बेचकर कुछ रुपए ले आओ।" बेटा हार लेकर दुकान पर गया।
चाचा ने हार बहुत देर तक अच्छी तरह से जाँचा–परखा और लड़के से कहा – "बेटा, माँ से जाकर कहना कि अभी बाजार जरा मंदा है, थोड़ा रुककर बेचना अच्छा दाम मिलेगा।" उस लड़के को कुछ रुपये देकर अगले दिन से दुकान पर काम करने आने के लिए कह दिया।

लड़का अब रोज दुकान पर जाने लगा और हीरों और रत्नों की परख का काम भी सीखने लगा। समय बीता और वह हीरों व रत्नों का अच्छा पारखी बन गया। दूर–दूर से लोग उसके पास अपने रत्नों की जाँच करवाने आने लगे।
एक दिन उसके चाचा ने उससे कहा –बेटा, अपनी माँ से वह हीरों का हार लेकर आना, अब बाजार में तेजी आ गई है, अच्छे दाम मिल जाएँगे। उसने घर जाकर अपनी माँ से वह हार माँगा और घर पर ही हार को परखा तो पाया कि हार तो नकली था।
वह दुकान पर खाली हाथ लौट आया तो चाचा ने पूछा– बेटा, हार नहीं लाए क्या? तब लड़के ने जवाब दिया– वह तो नकली था।
इस पर चाचा बोले जब तुम पहली बार वह हार लेकर आए थे, तब अगर मैं उस हार को नकली बता देता तो तुम यही सोचते कि आज हमारे ऊपर जब बुरा वक्त आया तो चाचा हमारी असली वस्तु को भी नकली बता रहे हैं, परंतु आज तुम्हें खुद पता चल गया कि वह हार नकली है।
सही व सच्चे ज्ञान के अभाव में मानव किसी भी वस्तु को गलत ही समझेगा और यही गलतफहमी रिश्तों में दूरियाँ ला देती है।

–सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

कैलाश की मदद में आये व्यक्ति का नाम मनुज था। यह कैलाश के मुकाबले थोड़ा कठोर व्यक्तित्व का था। दो चार वाहन जब बहानेबाजी कर आगे बढ़ गये तो फिर उसने अनुनय–विनय का रास्ता छोड़ डांट–फटकार का रास्ता अपनाया। इसका परिणाम यह निकला कि वह दो–तीन जीपों को इस काम हेतु रोकने में सफल हो गया। अब दोनों मिलकर डिस्पेन्सरी से घायलों को लाने और जीप में बिठाने लगे, इनकी देखा देखी कुछ और लोग भी मदद को आगे आ गये। यह प्रक्रिया भाुरू ही हुई कि कहीं से दो–तीन पुलिसकर्मी अचानक प्रकट हो गये। ये लोगों की सहायता करना तो दूर, उल्टे इनके कार्य में बाधा उत्पन्न करने लगे। पहले तो पूछाा कि किसकी अनुमति से घायलों को ले जाया जा रहा है तो इन्हें बताया कि घायलों को समुचित अस्पताल में पहुँचाने हेतु किसी की अनुमति की आवश्यकता नहीं। मनुज ने तो एक सिपाही को फटकारते हुए कहा कि यह काम तो आपका है जो हम कर रहे हैं।
एक पुलिसकर्मी शान्त हुआ तो दूसरे ने सवाल खड़ा कर दिया कि घायलों से आपका क्या रिश्ता है। कैलाश ने कहा कि मानव धर्म के नाते ये हमारे भाई–बहन हैं, उसी रिश्ते के तहत हम इनकी मदद कर रहे हैं। यह सुन कर पुलिसकर्मी चिढ़ गया, अपना डण्डा जमीन पर मारते हुए बोल उठा कि बड़ी बड़ी बातें मत करो, अभी पंचनामा नहीं बना है इसलिये किसी को भी यहां से ले जाने नहीं दिया जायगा। इस पर मनुज को गुस्सा आ गया, उसने अपना स्वर तेज करते हुए कहा कि घायलों में अगर आपका कोई भाई–बन्धु होता तो क्या आप पंचनामे की प्रतीक्षा करते। मनुज के तेवर देख कर पास खड़े कुछ अन्य लोगों में भी हिम्मत आ गई, वे भी पुलिस वालों को कोसने लगे कि घायलों की मदद करना तो दूर, जो मदद कर रहे हैं उनके भी कार्य में अड़चनें पैदा कर रहे हैं।
इतने लोगों का समर्थन देख मनुज ने भी रौद्ररूप धारण कर लिया। उसने पुलिस वालों को चुनौती देते हुए कहा कि हम तो इन सबको सिरोही अस्पताल पहुँचा कर रहेंगे, तुम्हें अगर हमें गिरफ्तार करना है तो सिरोही आकर कर लेना। इसके साथ ही उसने सबको आदेश दे दिया कि घायलों को फटाफट जीपों में बिठाओ। अब किसी पुलिसकर्मी की हिम्मत नहीं हुई कि वे एक शब्द भी बोलें। तीनों चुपचाप एक तरफ खड़े होकर खिसियानी नजरों से देखते रहे।

आगे बढ़ने की दिशा में पहला कदम है आत्मविश्वास

जग भला तो आप भला

कुछ लोग दूसरों की बातों से प्रभावित होते हैं। लोगों ने उन्हें अच्छा कहा तो उन्हें लगता है कि वे सचमुच ऐसे हैं। वहीं यदि कुछ गलत कहा तो दिल पर ले लेते हैं। यह नजरिये की समस्या है। आपका नजरिया बचपन से होता है। छोटा बच्चा यदि बार–बार हर छोटी बात के लिए अभिभावक की अनुमति लेता है तो शायद उसकी यह आदत आगे भी बनी रह सकती है। लोगों की अनुमति या राय ऐसे लोगों के लिए अहम होती है। ऐसे लोग एक खास तरह का चश्मा धारण कर लेते हैं कि लोग उन्हें बुरा कह रहे हैं, उन्हें देखकर यह सोच रहे हैं, उन्हें यह कहेंगे आदि। ऐसा नहीं है कि उनका चश्मा नकारात्मक ही होता है। कुछ लोग इसके उलट होते हैं। उन्हें लगता है कि लोग मेरी तारीफ ही कर रहे हैं, मुझे पसंद करते हैं आदि।

यदि आप लोगों की तरफ देखकर यह सोचते हैं कि वे हमेशा आपके बारे में नकारात्मक या सकारात्मक ही बोलेंगे तो यह जरूरी नहीं। ऐसा वे लोग अधिक सोचते हैं, जिनमें आत्मविश्वास की कमी होती है। स्वावलंबी होने के बजाय परावलंबी होते हैं।

आत्मविश्वास खुद को आगे बढ़ाने की दिशा में पहला कदम

सबसे मुश्किल बात यह कि वे अपनी कमजोरियों को और बड़ा बनाकर देखते हैं। इससे उनकी खूबियां भीतर कहीं दब जाती हैं या बाहर नहीं आ पातीं। उन पर वे फोकस ही नहीं कर पाते। कोई दूसरा उनकी कमी क्या निकालेगा, वे खुद अपनी कमियां बता देते हैं। सोचें कि आप उक्त में से किस प्रकार के व्यक्तित्व हैं? यदि आप तीसरी श्रेणी में हैं तो आपको समझना होगा कि दुनिया वही देखेगी, जो आप खुद को देखेंगे या समझेंगे। खुद को आदर देंगे, इसे आगे बढ़ाने में लगातार प्रयासरत रहेंगे तो एक दिन दुनिया आपको सलाम जरूर करेगी। न भूलें कि आत्मविश्वास खुद को आगे बढ़ाने की दिशा में पहला कदम है।

रामबाण है इमली

इमली जहां स्वाद के मुकाबले में किसी से कम नहीं है वहीं ये कई तरह के औषधीय गुणों से भी भरपूर है। यह एक ऐसा फल, जो मीठा और खट्टा दोनों के शौकीनों को पसंद हो सकता है। हरी होती है तो स्वाद में खट्टी लगती है और पकने के बाद लाल रंग लेती है और मीठी हो जाती है।इमली के बीज में ट्रिप्सिन इन्हिबिटर गुण (प्रोटीन को बढ़ाना और नियंत्रित करना) पाया जाता है। इससे हृदय रोग, हाई ब्लड शुगर, हाई–कोलस्ट्रॉल और मोटापा संबंधी समस्याएं नियंत्रित की जा सकती हैं। इसमें कुछ ऐसे पोषक तत्व पाए जाते हैं जो पाचन में सहायक डाइजेस्टिव जूस को प्रेरित करने का काम करते हैं। इस कारण पाचन क्रिया बेहतर तरीके से काम करने लगती है। इमली में कैल्शियम प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। यह तंत्रिका तंत्र को सही गति देने का काम करता है। इसमें कुछ ऐसे पोषक तत्व पाए जाते हैं जिनमें एंटी इंलेमेटरी (सूजन कम करने) और एंटी–स्ट्रेस (मानसिक तनाव कम करने) प्रभाव पाए जाते हैं। इमली में एंटीऑक्सिडेंट और हेप्टोप्रोटेक्टिव प्रभाव पाए जाते हैं। पीलिया और लिवर के लिए फायदेमंद है। इसमें एंटी–मलेरिया के साथ–साथ फेब्रियूज और लैक्सेटिव प्रभाव भी पाए जाते हैं। इसका उपयोग मलेरिया और माइक्रोबियल डिजीज से छुटकारा दिलाने में सहायक होता है। इमली का उपयोग हाई ब्लड प्रेशर की समस्या से छुटकारा दिलाने में लाभकारी साबित हो सकता है। इमली में मैलिक, टार्टरिक और पोटैशियम एसिड प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। पेट के लिए काफी उपयोगी है। इमली खाने के फायदे में त्वचा से डेड स्किन निकालना और उसे निखारना भी शामिल है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

ऊर्जा को पहचानें

हमारे पास हर वक्त दो ही तरह की ऊर्जा हर समय मौजूद रहती है, नकारात्मक और सकारात्मक। यह जगत एवं संपूर्ण ब्रह्माण्ड ऊर्जा सकारात्मक। यह जगत एवं संपूर्ण ब्रह्माण्ड ऊर्जा का भण्डार है। हमारा अस्तित्व ऊर्जा के अक्षय ओर क्षय पर ही निर्भर है। यह नियम सिर्फ हम मुनष्यों पर ही नहीं, बल्कि जगत के प्रत्येक जीव और जीवंत वस्तु पर लागू होता है। तुम खूब पूजा–पाठ करते हो, नियम–अनुशासन का पालन करते हो तब भी तुम्हारा व्यापार पुरजोर प्रयास के बावजूद प्रगति नहीं कर पा रहा है, तुम्हें और तुम्हारे परिजनों को बीमारियां घेर रही है, तरक्की के लिए प्रयास तो खूब करते हो, लेकिन कामयाबी नहीं मिल मिल रही। उदासीनता मन पर हावी हो गई है। आखिर तुम्हारे जीवन में यह नकारात्मक परिस्थितियां क्यों निर्मित हो रही है ? यदि तुम्हारे जीवन में ऐसा कुछ असामान्य घट रहा, तो इसका एकमेव कारण यही है कि तुम्हारे जीवन में नकारात्मक ऊर्जा का प्रवेश हो चुका है। कहां से आई यह नकारात्मक ऊर्जा तुम यदि अपने आस–पास नजर डालोगे तो तुम्हें उत्तर भी मिल जाएगा। पुराना सामान, अनुपयोगी, वस्तुएं जैसे बंद घड़ी, काले पड़ चूके कलश सिर्फ साल में एक बार दीवाली के समय ही जाले साफ करने के काम आने वाली झाड़ू और टूटी चप्पलें जैसी तमाम वस्तुएं तुमने अपने घर के स्टोर रूम या छत पर इकट्ठी कर रखी है, यही वस्तुएं नकारात्मक ऊर्जा का संचार कर रही है और तुम्हारे जीवन को कुप्रभावित कर रही है।

अनुभव अमृतम्

जर्जर तन चिपक्या पेटां रा,
गाल खाल रा खाड़ा रे।
कटे अंगरख्यां कटे पगरख्यां,
आधा फिरे उघाड़ा रे।।

एक शिविर से आ रहे थे। बूझड़ा से। एक सोलह अठारह साल की लड़की आ रही थी। सिर पर लकड़ी की मूली लम्बी बहुत वजन कम से कम सौ किलो होगा। पैर में चप्पल नहीं, गरमी बहुत थी। मैंने गाड़ी रूकवाई, उसमें चप्पल जूते रखते तो उसको दिये। मेरे पास में बैठे सेठ साहब बोले– इनका तो स्वभाव है कैलाश जी। इनका स्वभाव नहीं इनकी मजबूरी है– सेठ साहब। मजबूरी नहीं होती तो चप्पल ये भी पहनते, धूप इनको भी लगती है। ठण्ड में ये भी ठिठुरते हैं भूख इनको भी लगती है, इनकी तो आदत पड़ी हुई है ऐसा कहते हैं। ये नहीं सुधर सकते हैं। कहाँ चले गये? कैलाश ये तो आदिवासी बच्चे हैं, कभी नहीं सुधर सकते हैं। आपका बच्चा फेल हो जाये तो ट्युशन लगाते हैं। कितना भी पैसा खर्च हो जाये, दो–दो गणित का ट्यूशन लगाते हैं। आपका बच्चा भोंट था, ट्यूशन क्यों पढ़ाया? क्योंकि आपका बच्चा है ना? इसलिये भोंट होते हुए भी ट्यूशन पढ़ाया है। पराये बच्चे हैं, छोड़ दिया तो छोड़ दिया। यही समझना है कि सब में राम समाया है।

कात्याफला– दिनांक– 20.11.1988 रोगी सेवा–286 अन्य सेवा 1210

कात्याफला दिनांक 27.11.1988 रोगी सेवा 286 अन्य सेवा 1210

वाडाफला दिनांक 04.12.1988 रोगी सेवा 313 अन्य सेवा 1117

अलसीगढ़ दिनांक 11.12.1988 रोगी सेवा 513 अन्य 1725

बूझड़ा दिनांक 18.12.1988 रोगी सेवा 213 अन्य 1125

अलसीगढ़ दिनांक 25.12.1988 रोगी सेवा 313 अन्य सेवा 1117

सेवा ईश्वरीय उपहार– 398 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूटेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com•आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023